SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

# बाइबल ज्ञान के बारे में क्या कहती है? — आधार · स्ट्रॉन्ग्स नंबरों के साथ केजेवी शास्त्र

**THE FOUNDATION · THE ORIGINAL STUDY, SET IN THE ANCIENT ORDER**

*ज्ञान — आधारभूत बाइबलीय सिद्धांत*

## उद्घाटन शब्द

*एक बुद्धिमान व्यक्ति की चाल पर ध्यान दो: वह ज्ञान का संचय करता है। वह उसे अपने मन में और अपने हृदय में इकट्ठा करता है, जैसे कोई मनुष्य अपने घर में सामान इकट्ठा करता है, और वह उसे संकट के दिन में सुरक्षा देता है। इसके लिए पुराना इब्रानी शब्द है दाथ (H1847, ज्ञान) — जो जाना गया वह सुरक्षित रखा जाता है, और जो नहीं जाना गया वह खो जाता है। परन्तु मूर्ख कुछ भी सुरक्षित नहीं रखता, और उसका अपना मुँह उसे विनाश के निकट ले जाता है। और सुनो कि जब एक सम्पूर्ण जाति जानने से इन्कार करती है तो उसके साथ क्या होता है: वे बंधुआई में चले जाते हैं, और वे नष्ट हो जाते हैं — उत्साह की कमी से नहीं, परन्तु जानने की कमी से। जो कोई ज्ञान को दूर करता है, वह स्वयं दूर कर दिया जाता है। तौभी परमेश्वर ने बंधुए को सहायता के बिना नहीं छोड़ा है। अभिषिक्त जन बंदी को स्वतंत्र करने, अंधों को दृष्टि देने, और लोगों को सत्य के द्वारा पश्चाताप की ओर ले चलने के लिए आया। और यह ज्ञान कैसे आता है? सब कुछ एक ही बार में नहीं। यह वैसे आता है जैसे एक बालक को भोजन दिया जाता है: पहले दूध, फिर ठोस आहार; यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा, एक पंक्ति के ऊपर दूसरी पंक्ति रखी जाती है। और यह केवल नम्र जनों के पास आता है। जो व्यक्ति अपने ही ज्ञान से भरा है उसके पास परमेश्वर से सिखाए जाने के लिए कोई स्थान नहीं है; क्योंकि प्रभु को कभी किसी ने कुछ नहीं सिखाया। इसलिए अपने विचारों को छोड़ दो, और उसके विचारों को ग्रहण करो। इस सबका लक्ष्य इस संसार में बुद्धिमान होना नहीं है: यह परमेश्वर को स्वयं जानना है, और अपने सारे दिनों में उस ज्ञान में बढ़ते जाना है। इसे खोज कर देखो।*

## इस अध्ययन में उत्तर दिए गए तीन प्रश्न:

1. एक बुद्धिमान व्यक्ति ज्ञान का क्या करता है?
2. उस प्रजा पर क्या आ पड़ता है जिनमें ज्ञान नहीं है — और इसका उपाय क्या है?
3. ज्ञान किसी व्यक्ति को कैसे प्राप्त होता है, और किस उद्देश्य के लिए?

## ग्रीक मुख्य शब्द

**"ज्ञान"** — **G1108 gnosis** — ज्ञान, जानकारी
*हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ते जाओ*

**"स्वीकार करना"** — **G1922 epignosis** — मान्यता, पूर्ण विवेक, स्वीकृति
*सत्य के ज्ञान की प्राप्ति के लिए मन-फिराव*

**"जानना"** — **G1097 ginosko** — जानना
*ज्ञान का लक्ष्य — परमेश्वर को जानना*

## हिब्रू मुख्य शब्द

**"ज्ञान"** — **H1847 daath** — ज्ञान, बोध
*ज्ञानी लोग ज्ञान को संचय करते हैं*

**"जानना"** — **H3045 yada** — देखकर जान लेना, निश्चित रूप से पता लगाना
*प्रभु को जानने का परिणाम*

**"समझ"** — **H998 biynah** — समझ
*ज्ञान प्राप्त कर, समझ प्राप्त कर*

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — दाअथ (H1847, ज्ञान) शब्द यादा (H3045, जानना) से आता है। इब्रानी में, ज्ञान शब्दों का ढेर नहीं है जो एक साथ जमा किए गए हों; वह जानने का फल है। जो तुम जानते हो वह इस बात से बहता है कि तुम किसे जानते हो — और यही कारण है कि यह अध्ययन परमेश्वर के ज्ञान पर समाप्त होता है।)*

## खुलने वाला लंगर

**नीतिवचन 10:14** बुद्धिमान लोग ज्ञान का संग्रह करते है, परन्तु मूर्ख के बोलने से विनाश होता है। **[H1847 daath ⚑]**
**बुद्धिमान लोग ज्ञान का संग्रह करते है.**
*(मेरे व्यक्तिगत विचार — बुद्धिमान लोग ज्ञान को मन में और हृदय में संचित करते हैं। इसे घर में रखे सामान की भाँति संचित किया जाता है, उस दिन के लिए तैयार जब इसकी आवश्यकता हो। मूर्ख मनुष्य कुछ भी संचित नहीं करता, और उसका अपना मुख विनाश के निकट है।)*

### I. नीतिवचन — बुद्धिमान पुरुष ज्ञान इकट्ठा करते हैं

**A. नीतिवचन 11:9** भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं। **[H1847 daath ⚑]**
**परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं.**
*(मेरे व्यक्तिगत विचार — तुम ज्ञान के द्वारा विनाश से बचाए जाते हो। कपटी का मुख विनाश करता है; सत्य का ज्ञान बचाता है।)*

**B. नीतिवचन 12:1** जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डाँट से बैर रखता, वह पशु के समान मूर्ख है। **[H1847 daath ⚑]**
**जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है.**

**C. नीतिवचन 15:14** समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज में रहता है, परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता से पेट भरते हैं। **[H1847 daath ⚑]**
**समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज में रहता है.**

**D. नीतिवचन 18:15** समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं। **[H1847 daath ⚑]**
**बुद्धिमान का हृदय ज्ञान प्राप्त करता है + कान ज्ञान की खोज करता है।**

**E. नीतिवचन 24:4** ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं। **[H1847 daath ⚑]**
**ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं.**

**F. नीतिवचन 24:5** वीर पुरुष बलवान होता है, परन्तु ज्ञानी व्यक्ति बलवान पुरुष से बेहतर है। **[H1847 daath ⚑]**
**परन्तु ज्ञानी व्यक्ति बलवान पुरुष से बेहतर है.**

### II. ज्ञान की कमी — बंधुआई और विनाश

**A. यशायाह 5:13** इसलिए अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुवाई में जाती है, उसके प्रतिष्ठित पुरुष भूखे मरते और साधारण लोग प्यास से व्याकुल होते हैं। **[H1847 daath ⚑]**
**इसलिए अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बँधुवाई में जाती है.**

**B. होशे 4:6** मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तूने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा। इसलिए कि तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ दूँगा। **[H1847 daath ⚑]**
**ज्ञान की कमी के कारण नाश हुए + ज्ञान को त्याग दिया → मैं भी तुझे त्याग दूंगा।**
*(मेरे व्यक्तिगत विचार — विनाश ज्ञान की कमी से आता है। और इसके क्रम पर ध्यान दें: यदि तुम ज्ञान को अस्वीकार करते हो, तो यहोवा भी तुम्हें अस्वीकार करेगा। लोग उत्साह की कमी से नहीं, परन्तु जानने की कमी से नष्ट होते हैं।)*

### III. उपचार — बंदियों के लिए स्वतंत्रता

**A. लूका 4:18** "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, (यशा. 58:6, यशा. 61:1,2)
**[G859 aphesis ⚑]**

**बंधुओं को छुटकारे का प्रचार + अंधों को दृष्टि का पाना + कुचले हुओं को स्वतंत्र करना।**

**B. 2 तीमुथियुस 2:25** और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहचानें।
**[G1922 epignosis ⚑]**

**कि वे भी सत्य को पहचानें.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — पश्चाताप सत्य को स्वीकार करने से आता है। यह शब्द एपिग्नोसिस (G1922, स्वीकार करना) है — एक पूर्ण जानना। कोई व्यक्ति उससे मुँह नहीं मोड़ सकता जिसे वह नहीं जानता; इसलिए ज्ञान पश्चाताप से पहले आता है, और कोमल शिक्षक इन दोनों से पहले आता है।)*

## IV. रेखा पर रेखा — पहले दूध, फिर ठोस आहार

**A. यशायाह 28:9** "वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं? **[H1847 daath ⚑]**

**वह ज्ञान किसे सिखाएगा? उन्हें जो दूध से छुड़ाए गए हैं।**

**B. यशायाह 28:10** क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।" **[H6957 qav ⚑]**

**नियम पर नियम + पंक्ति पर पंक्ति + यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा।**

**C. 1 कुरिन्थियों 3:1** हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। **[G3516 nepios ⚑]**

**आत्मिक जानकर नहीं, परन्तु शारीरिक जानकर = मसीह में बालक।**

**D. 1 कुरिन्थियों 3:2** मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको न खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो
**[G1051 gala ⚑]**

**दूध पिलाया, न कि मांस → क्योंकि तुम अब तक इसे सहने के योग्य नहीं थे।**

**E. इब्रानियों 5:14** पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।
**[G5160 trophe ⚑]**

**पर अन्न सयानों के लिये है → भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — दूध ठोस आहार से पहले आता है; परमेश्वर सिखाने का यही तरीका है, नियम पर नियम, यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा। परन्तु जो कोई दूध पर ही टिका रहता है, वह शिशु ही बना रहता है। ज्ञान सीखने और सिद्धांत को समझने के लिए व्यक्ति को दूध छुड़ाना पड़ता है — थोड़ा-थोड़ा करके खिलाया जाना पड़ता है, जब तक कि उसकी इंद्रियाँ भले और बुरे में भेद करने के लिए अभ्यास द्वारा प्रशिक्षित न हो जाएँ।)*

## V. विनम्रता ज्ञान को खोलती है

**A. यशायाह 40:13** किसने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया या उसका सलाहकार होकर उसको ज्ञान सिखाया है? (1 कुरि. 2:16)
**[H7307 ruach ⚑]**

**किसने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया या उसका सलाहकार होकर उसको ज्ञान सिखाया है? (1 कुरि. 2:16?**

**B. यशायाह 40:14** उसने किस से सम्मति ली और किसने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है? (रोम. 11:34,35) **[H1847 daath ⚑]**

**किसने उसे शिक्षा दी, और ज्ञान सिखाया?**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — किसी ने भी यहोवा को कुछ नहीं सिखाया। यदि आप अपने आप से भरे हुए हैं, तो परमेश्वर के ज्ञान को ग्रहण करना कठिन है; विनम्रता यह स्वीकार करना है कि हम कितना कम जानते हैं। जो व्यक्ति यह समझता है कि वह कितना कम जानता है, वह परमेश्वर द्वारा सिखाए जाने के लिए तैयार है।)*

**C. रोमियों 10:2** क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ, कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। **[G1922 epignosis ⚑]**

**कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं.**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — बिना ज्ञान के उत्साह पर्याप्त नहीं है। एक व्यक्ति तेज़ी से दौड़ सकता है और गलत दिशा में दौड़ सकता है। तुम्हारा उत्साह ज्ञान द्वारा निर्देशित हो।)*

## समापन

**2 पतरस 3:18** पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन। **[G1108 gnosis ⚑]**

**अनुग्रह में + हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ते जाओ।**

**नीतिवचन 2:5** तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा। **[H1847 daath ⚑]**

**यहोवा के भय को समझो + परमेश्वर के ज्ञान को प्राप्त करो।**

*(मेरे व्यक्तिगत विचार — यहाँ पूरा अध्ययन एक पंक्ति में है: ज्ञान, दाथ (H1847, ज्ञान), बुद्धिमानों द्वारा संचित किया जाता है, और उसकी कमी विनाश लाती है; वह पंक्ति दर पंक्ति आता है, ठोस आहार से पहले दूध, नम्र लोगों के लिए, न कि आत्मसंतुष्ट लोगों के लिए; और उसका उद्देश्य बहुत सी बातें जानना नहीं, बल्कि परमेश्वर को जानना है, जिनोस्को (G1097, जानना)। धर्मी उसके द्वारा छुड़ाया जाता है, बंदी उसके द्वारा स्वतंत्र किया जाता है, बालक उसके द्वारा बढ़ता है। उसे संचित करो, और उसमें बढ़ो, उसकी महिमा के दिन तक।)*

## अभ्यास प्रश्नोत्तरी

**1. नीतिवचन 10:14 — बुद्धिमान लोग संचय करके रखते हैं:**

a) धन
b) ज्ञान
c) शब्द

**2. होशे 4:6 — मेरी प्रजा ज्ञान की कमी के कारण नष्ट हुई है:**

a) ज्ञान
b) शक्ति
c) निर्देश

**3. नीतिवचन 11:9 — ज्ञान के द्वारा बचाए जाएंगे:**

a) बुद्धिमान
b) चतुर
c) धर्मी

**4. यशायाह 5:13 — मेरी प्रजा अज्ञानता के कारण बंधुआई में चली गई है, क्योंकि:**

a) उनके पास ज्ञान नहीं है
b) तू अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गई है
c) उनके प्रतिष्ठित पुरुष भूखों मरते हैं

**5. 2 तीमुथियुस 2:25 — कदाचित् परमेश्वर उन्हें पश्चात्ताप दे, ताकि वे:**

a) दृष्टि प्राप्त होना
b) यहोवा का भय
c) सत्य को स्वीकार करना

**6. यशायाह 28:9 — वह ज्ञान किसको सिखाएगा:**

a) मसीह में शिशु
b) उन्हें जो दूध से छुड़ाए गए हैं
c) उन्हें जो मनुष्यों के समान चलते हैं

**7. रोमियों 10:2 — क्योंकि मैं उनके विषय में गवाही देता हूँ, कि उन्हें परमेश्वर के विषय में धुन तो है, पर सच्चे ज्ञान के अनुसार नहीं:**

a) ज्ञान
b) धार्मिकता
c) व्यवस्था

**उत्तर कुंजी: 1-b, 2-a, 3-c, 4-a, 5-c, 6-b, 7-a**

## यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

**दूध कैसे मांस बनता है: दूध और मजबूत आहार परमेश्वर के वचनों के आदि सिद्धांतों की ओर ले जाते हैं (इब्रानियों 5:12) — वचन का चोखा दूध, कि तुम उससे बढ़ते जाओ (1 पतरस 2:2)।**

**बंधुआ कैसे मुक्त होता है: बंधुओं के लिए छुटकारा प्रभु के अनुग्रहकारी वर्ष की ओर ले जाता है — अर्थात् यूबली का वर्ष, जब सारे देश में स्वतंत्रता की घोषणा की जाती है (लैव्यव्यवस्था 25:10 → लूका 4:19)।**

**→ स्वीकार करना कहाँ जाकर समाप्त होता है: सत्य को स्वीकार करना जीवन के लिये मन फिराव की ओर ले जाता है (प्रेरितों के काम 11:18) और फंदे से छूटने की ओर (2 तीमुथियुस 2:26)।**

**वचन किस प्रकार बनाया गया है: नियम पर नियम, यहां थोड़ा, और वहां थोड़ा (यशायाह 28:10) — आज्ञा पर आज्ञा जोड़ी गई, सम्पूर्ण वचन क्रम में स्थापित।**

**याजक इसे कैसे बनाए रखता है: याजक के होंठों को ज्ञान की रक्षा करनी चाहिए (मलाकी 2:7), और जो ज्ञान को अस्वीकार करता है वह याजक नहीं रहेगा (होशे 4:6) — ज्ञान को संचित करना याजक का उत्तरदायित्व है; और तुम एक राजकीय याजकवर्ग हो (1 पतरस 2:9)।**

## SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEPBible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEPBible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).